*भारतीय व्यवसाय: अतीत, वर्तमान और भविष्य**

शक्तिकांत दास

आजादी का अमृत महोत्सव समारोह के प्रतिष्ठित सप्ताह के हिस्से के रूप में केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआईसी), राजस्व विभाग, भारत सरकार द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में इस तरह के एक महान सभा को संबोधित करते हुए बहुत खुशी हो रही है। मैंने आज अपने संबोधन के लिए जो विषय चुना है, वह है, "भारतीय व्यवसाय: अतीत, वर्तमान और भविष्य" जो कि यहां के दर्शकों के बीच गुंजायमान होगी। व्यवसाय किसी अर्थव्यवस्था का आधार होते हैं और इस तरह के अवसर पर, यह देखना सार्थक होगा कि वर्षों में भारतीय व्यवसाय कैसे विकसित हुए हैं। इस विषय को चुनने का एक और कारण है- सुधारवादी परिवर्तनों का वर्तमान संदर्भ , जो भारत और दुनिया भर में व्यापार परिदृश्य को बदल रहा है।

मैंने अपनी बात को निम्नलिखित क्रम में संरचित किया है। मैं भविष्य के लिए सबक लेने के उद्देश्य से भारतीय व्यवसायों के ऐतिहासिक विकास को याद करके आरंभ करूंगा। इसके बाद मैं वर्तमान परिदृश्य की ओर रुख करूंगा जहां मैं भारतीय व्यवसायों के लिए आज उपलब्ध शानदार अवसरों और उन चुनौतियों पर प्रकाश डालने वाला हूं जिनसे उन्हें जूझना होगा। मैं कॉरपोरेट प्रशासन के पहलुओं और संबंधित विषयों को उजागर करने का भी प्रस्ताव करता हूं; जो किसी भी संस्था या व्यवसाय द्वारा निरंतर प्रदर्शन बनाए रखने के लिए अनिवार्य हैं।

ऐतिहासिक रूप से, व्यवसाय, उत्पादन और व्यापारिक गतिविधियों में नवीनता लाकर धन के निर्माता रहे हैं; जिससे उच्च उत्पादकता और लोगों के बेहतर जीवन स्तर की सुविधा प्राप्त हुई है। विकास और रोजगार के अवसर पैदा करने के अलावा, संपन्न व्यवसाय सरकार के लिए कल्याणकारी उपाय करने के लिए कर भुगतान के माध्यम से महत्वपूर्ण संसाधन उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार, विकास और कल्याण दोनों दृष्टिकोण से, व्यवसाय समग्र आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। साहित्य में नोबेल पुरस्कार विजेता टीएस इलियट के शब्दों में, "केवल बहुत दूर जाने का जोखिम उठाने वाले ही यह पता लगा सकते हैं कि कोई कितनी दूर जा सकता है।"[1] व्यवसाय का अंतर्निहित उद्देश्य अवसरों का पता लगाना और उनका लाभ उठाना है।

भारत में, व्यापार और उद्यमिता का हमारे समाज में हमेशा एक विशेष स्थान रहा है। भारतीय व्यापार का इतिहास एक आकर्षक कहानी है और यह हमारे देश के राजनीतिक और आर्थिक इतिहास के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। परंपरागत रूप से, भारतीय व्यवसाय स्थानीय ज्ञान और संसाधनों में निहित थे, जिनकी दुनिया भर में बहुत प्रशंसा हुई थी। हालाँकि, औपनिवेशिक काल के दौरान, हमारे कई व्यवसायों को अस्तित्वगत चुनौतियों का सामना करना पड़ा था। नवोन्मेष और सुधार के लिए लचीलापन और क्षमता दिखाते हुए, भारतीय व्यापार न केवल जीवित रहा है, बल्कि अब यह भारत की विकास कहानी को आगे ले जाने के लिए अच्छी स्थिति में है। वास्तव में, यह वैश्विक विकास चालक के रूप में भारत के आगमन का क्षण हो सकता है।

एक नज़र इतिहास पर

भारतीय व्यापार का इतिहास काफी लंबा है । भारत अपने प्रारंभिक इतिहास से ही वैज्ञानिक नवाचार का एक प्रमुख केंद्र था, जिसने भारत को दवाओं, गणित, खगोल विज्ञान और धातु विज्ञान जैसे कई क्षेत्रों में एक प्रमुख स्थान दिया। मध्यकाल के दौरान, भारत एक प्रमुख अर्थव्यवस्था थी जिसका शेष विश्व के साथ व्यापारिक संबंध थे। भारत सिल्क रूट और कॉटन रोड का केंद्र था। भारत की स्वदेशी शिल्पकला विश्व प्रसिद्ध थी।

1700 ई. में, विश्व सकल घरेलू उत्पाद में चीन की हिस्सेदारी 22.3 प्रतिशत से आगे (मैडिसन, 2001) भारत की हिस्सेदारी 24.4 प्रतिशत थी । फिर भी, बड़े पैमाने पर घरेलू व्यापार राजनीतिक परिदृश्य की खंडित प्रकृति और ढांचागत बाधाओं के

* श्री शक्तिकांत दास, गवर्नर, भारतीय रिज़र्व बैंक का संबोधन - 9 जून, 2022 - मुंबई में केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड द्वारा आयोजित आज़ादी का अमृत महोत्सव समारोह के प्रतिष्ठित सप्ताह के अवसर पर दिया गया।

[1] हैरी क्रॉस्बी की कविताओं की 1931 की पुस्तक 'ट्रांजिट ऑफ वीनस' की प्रस्तावना

कारण प्रतिबंधित था। जबकि व्यापार और धन उधार व्यवसाय की पहचान थे, विनिर्माण, जो कि मुख्य रूप से छोटे पैमाने पर था, काफी हद तक कारीगरों पर निर्भर था। संक्षेप में, व्यापारियों द्वारा संचालित समृद्ध बैंकिंग और विनिमय व्यवसाय के साथ-साथ व्यापार भारतीय व्यापार का चेहरा था।

औपनिवेशिक काल

साम्राज्यवादी शक्तियों के आगमन और नए व्यापारिक मार्गों की खोज ने औपनिवेशिक काल के दौरान भारतीय व्यापार का चेहरा पूरी तरह से बदल दिया। 18वीं शताब्दी के अंत में औद्योगिक क्रांति की शुरुआत ने इंग्लैंड को अग्रणी औद्योगिक शक्ति की स्थिति में पहुंचा दिया था। ब्रिटिश टैरिफ नीति ने भारत के घरेलू औद्योगिक विकास और स्थानीय उद्यम की हानि के लिए कच्चे माल के निर्यात को प्रोत्साहित किया। 1948 में भारतीय रिज़र्व बैंक के एक सर्वेक्षण ने अनुमान लगाया कि भारत में निवेश की गई सभी विदेशी पूंजी का केवल 28 प्रतिशत विनिर्माण उद्योग में था, जबकि 37 प्रतिशत व्यापार और परिवहन में तथा 20 प्रतिशत चाय, कॉफी और रबर के पेड़ लगाने में निवेश किया गया था।[2] इसमें स्पष्ट रूप से, ब्रिटिश हितों को बढ़ावा देने पर बल दिया जा रहा था।

प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद, भारतीय व्यापार उस समय के राष्ट्रवादी उत्साह के बीच अपनी पकड़ बनाने में कामयाब रहा। युद्ध की व्यस्तता के कारण ब्रिटिश औद्योगिक शक्ति में गिरावट के साथ, कपड़ा, जूट, लोहा और इस्पात, कागज और सीमेंट जैसे कई भारतीय उद्योगों ने अपनी स्थिति मजबूत कर ली। पिछले दशकों में ठहराव को ध्यान में रखते हुए, प्रथम विश्व युद्ध के बाद औद्योगिक गतिविधियों में तेजी महत्वपूर्ण थी। विशेष रूप से, भारतीय व्यवसायी भी राष्ट्रवादी एजेंडे को आगे बढ़ाने और प्रचारित करके उस समय के सामाजिक-राजनीतिक माहौल में जीवित रहे।

आजादी के बाद

पूंजीगत रूप से संवेदनशील उत्पादन संरचना पर आधारित आर्थिक नीति के साथ भारतीय कारोबारी माहौल में बदलाव आया। भारतीय व्यवसाय उन बंधनों और बाधाओं से मुक्त थे जो उन्हें केवल कच्चे माल के उत्पादक के रूप में सीमित कर देते थे।

बाद की अवधि में, युद्धों (1962, 1965 और 1971), सूखे (1965-66) और ओपेक तेल संकट (1973) जैसे झटकों ने भारतीय अर्थव्यवस्था की अंतर्निहित कमजोरियों को उजागर किया। अंत में, अत्यधिक नियमों ने उद्यमशीलता के विकास को रोक दिया और अक्षमताओं को जन्म दिया जो उस अवधि के व्यापक आर्थिक असंतुलन में परिलक्षित हुआ। नतीजतन, बाजारों और निजी उद्यमों द्वारा संचालित राजनीतिक अर्थव्यवस्था की एक नई दृष्टि तेजी से विकसित होने लगी।

सुधार और उसके बाद

1980 के दशक में, आयात के लिए ओपन जनरल लाइसेंस (ओजीएल) सूची का विस्तार किया गया था, औद्योगिक नियंत्रण कुछ हद तक आसान हो गए थे, सीमित बाहरी उधार की अनुमति दी गई थी, और अप्रत्यक्ष कर सुधारों का एक प्रारंभिक संस्करण शुरू हुआ था। 1990 के दशक में प्रवेश के साथ बाहरी भुगतान संकट, 1991 के पथ-प्रदर्शक आर्थिक सुधारों में परिणत हुआ।

1990 के दशक के आर्थिक सुधार व्यापक थे और अनिवार्य रूप से उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की त्रिमूर्ति पर आधारित थे। उन्होंने विनियमन में ढील देकर; लाइसेंस-परमिट राज का अंत किया; बाहरी अभिविन्यास में वृद्धि और बाजार की शक्तियों को अपनी भूमिका निभाने देने का अवसर प्रदान किया। वित्तीय प्रणाली और बाहरी क्षेत्र में भी विवेकपूर्ण मानदंडों और पर्यवेक्षी प्रणाली को मजबूत करने; बैंकिंग क्षेत्र का परिचालन लचीलापन बनाने; कर और शुल्क; विनिमय दर; तथा पूंजी प्रवाह से संबंधित मौलिक सुधार हुए। इन सुधारों का उद्देश्य कुशल बाजारों को बढ़ावा देने के लिए प्रतिस्पर्धा लाना है जो विकास को बढ़ावा देते हैं, अर्थ का निर्माण करते हैं और गरीबी को कम करते हैं।

आर्थिक सुधारों की शुरुआत के बाद के वर्षों में, भारतीय व्यापार में विभिन्न क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। सूचना प्रौद्योगिकी, दूरसंचार, फार्मास्यूटिकल्स, ऑटोमोबाइल, होटल, कपड़ा, इंजीनियरिंग सामान और मनोरंजन जैसे कई क्षेत्रों में , हमारे व्यवसायों ने वैश्विक प्रतिष्ठा बनाई है। भारतीय व्यापारिक संस्थाओं

[2] सब्यसाची भट्टाचार्य, बिजनेस एंड द राज, इंडियन बिजनेस थ्रू द एज, फिक्की, 1999।

ने तेजी से तकनीकी परिवर्तनों के वातावरण में काफी लचीलापन दिखाया है। इसने उत्पाद जीवन चक्र को छोटा कर दिया है और नवाचार एवं प्रौद्योगिकी अब प्रतिस्पर्धी शक्तियों के प्रमुख स्रोत बन गए हैं। देश में अब एक विविध औद्योगिक आधार मौजूद है; जिसने वैश्विक वित्तीय संकट, हाल ही में कोविड -19 महामारी जैसे झटके और अब यूरोप में युद्ध से उत्पन्न कई चुनौतियों का सामना करने में लचीलापन दिखाया है।

नए अवसर और चुनौतियां

पिछले कुछ वर्षों में कई नीतिगत उपायों और सुधारों ने भारतीय व्यवसायों के लिए और अधिक तेजी से बढ़ने के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण किया है। व्यवसाय करने में सरलता में सुधार लाने, प्रक्रियाओं को आसान बनाने और व्यवसाय एवं उद्योग को एक बड़ी छलांग लगाने में सक्षम बनाने के लिए प्रोत्साहित करने पर स्पष्ट रूप से ध्यान दिया गया है। मेक इन इंडिया और प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआई) योजनाओं का उद्देश्य भारत को विश्व स्तरीय विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करना है। माल और सेवा कर (जीएसटी) के ऐतिहासिक सुधार ने विभिन्न केंद्रीय और राज्य कर कानूनों को एकीकृत किया और व्यवसायों को करों की व्यापकता से राहत प्रदान की। आरंभिक परेशानियों के बावजूद, नई प्रणाली ने राज्यों में कर बाधाओं को समाप्त कर दिया है और एक साझा बाजार का निर्माण किया है, जिससे माल के मुक्त आदान-प्रदान की सुविधा हो रही है और सभी क्षेत्रों में दक्षता लाभ लाया जा रहा है।

कुछ राज्यों ने प्रक्रियाओं को सरल बनाने और व्यापारिक प्रवेश तथा निकास के प्रतिबंधों को कम करने के लिए श्रम कानूनों को युक्तिसंगत बनाया है। दिवाला और ऋण शोधन अक्षमता संहिता (आईबीसी), 2016 दबावग्रस्त आस्तियों के समयबद्ध समाधान में मदद करने के लिए एक महत्वपूर्ण सुधार है जो विकास को चलाने के लिए दुर्लभ पूंजी को मुक्त करेगा। बुनियादी ढांचे की कमी को पूरा करने के लिए, राष्ट्रीय बुनियादी ढांचा पाइपलाइन (एनआईपी), राष्ट्रीय मुद्रीकरण पाइपलाइन (एनएमपी) और पीएम गति शक्ति सहित कई उपाय किए गए हैं। इन सभी उपायों से भारत में एक अनुकूल व्यापार पारिस्थितिकी तंत्र निर्माण की उम्मीद है।

2020 की शुरुआत में महामारी की शुरुआत के बाद से सरकार और रिज़र्व बैंक द्वारा की गई नीतिगत कार्रवाइयों ने बाजार के विश्वास को बहाल कर और आर्थिक गतिविधियों में त्वरित पुनरुद्धार सुनिश्चित करते हुए महामारी के विघटनकारी प्रभावों को कम किया है। साथ ही, व्यवसाय एक पुनर्परिभाषित चरण से गुजर रहे हैं और महामारी से उभरने वाली नई वास्तविकताओं को अपना रहे हैं। फर्मों/व्यवसायों/क्षेत्रों में डिजिटल तकनीकों और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) को अपनाने में तेजी आ रही है। ये विघटनकारी प्रौद्योगिकियां युवा उद्यमों को मौजूदा लोगों के प्रभुत्व वाले बाजारों में अपनी जगह बनाने के अवसर प्रदान करती हैं। इसका एक प्रतिबिंब भारतीय व्यापार परिदृश्य में कई स्टार्ट-अप के उद्भव में देखा जाता है; क्योंकि युवा उद्यमी डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन खुदरा, ऑन-डिमांड डिलीवरी, शिक्षा, सॉफ्टवेयर और बहुत कुछ में नए विचारों के साथ प्रयोग करते हैं। 1 बिलियन अमरीकी डालर से अधिक मूल्य के यूनिकॉर्न या नए व्यवसायों की संख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है। इन स्टार्ट-अप्स को एंजेल और वेंचर फंडिंग, इन्क्यूबेटरों और एक्सेलेरेटर्स के नए इकोसिस्टम के साथ-साथ समाज में खपत के नए पैटर्न का साथ मिला है। इन युवा उद्यमियों और स्टार्ट-अप को एक बिना मांगे सलाह देना चाहता हूँ कि उन्हें अपने व्यवसायों में जोखिम और कमजोरियों के निर्माण का लगातार मूल्यांकन करना चाहिए। मैं मानता हूं कि उनमें से कई पहले से ही ऐसा कर रहे हैं और जोखिम उठाना उनके व्यवसाय मॉडल का एक हिस्सा है, लेकिन फिर भी ये ऐसी चीजें हैं जिन्हें किसी भी व्यवसाय की दीर्घकालिक स्थिरता के लिए हमेशा अपने दिमाग में रखना चाहिए।

अब हम ऐसी स्थिति में हैं जहां अच्छी तरह से स्थापित फर्मों के लिए भी यह अनिवार्य हो गया है कि यदि वे प्रतिस्पर्धी बने रहना चाहते हैं तो प्रौद्योगिकी समाधान अपनाएं। नई तकनीकों के आगमन ने व्यवसाय के सभी पहलुओं को मौलिक रूप से बदल दिया है। डेटा एनालिटिक्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डीप लर्निंग से प्राप्त अंतर्दृष्टि द्वारा निर्णय लेने का तेजी से समर्थन किया जाता है। अब ग्राहकों की जरूरतों, नवोन्मेषों और बाजार के रुझानों का लगभग वास्तविक समय का आकलन है जो निर्माताओं को उत्पादन क्षमता का प्रबंधन करने, लागत बचाने, जोखिम कम

करने और ग्राहकों की बढ़ती जरूरतों को और अधिक तेज़ी से पूरा करने में मदद कर रहा है। हम डेटा-संचालित स्मार्ट निर्माण के युग में हैं। यदि भारतीय व्यवसाय प्रतिस्पर्धी बने रहने और विश्व स्तरीय स्थिति प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं, तो यह महत्वपूर्ण है कि वे जल्द से जल्द सही निवेश करने के लिए तैयार हों। मेरा मानना है कि रणनीति, प्रबंधन, संचालन और प्राथमिकताओं में महामारी से प्रेरित बदलाव बने रहने वाले हैं। इसलिए, भारतीय उद्यमियों की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि वे अपने व्यवसाय मॉडल में कितनी जल्दी और कुशलता से आवश्यक समायोजन करने में सक्षम हैं।

कॉर्पोरेट प्रशासन, नैतिकता, लेखा पारदर्शिता और व्यापार मॉडल

कॉरपोरेट अभिशासन

अब मैं आपका ध्यान किसी व्यवसाय की दीर्घकालिक सफलता को निर्धारित करने वाले एक सबसे महत्वपूर्ण पहलू की ओर आकर्षित करना चाहूंगा, जो है, कॉरपोरेट अभिशासन। सुदृढ़ कॉरपोरेट अभिशासन का जोर व्यावसायिक संस्थाओं में विश्वास, पारदर्शिता और जवाबदेही का माहौल तैयार करने में मदद करना है। लंबी अवधि के निवेश, व्यापार स्थिरता और अखंडता को बढ़ावा देने के लिए ये पूर्वापेक्षाएँ हैं। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि विश्वास किसी व्यवसाय की सबसे मूल्यवान संपत्ति है; और अच्छे अभिशासन का उद्देश्य संगठन में उस भरोसे की रक्षा और संरक्षण करना है। अच्छे अभिशासन में कंपनी के बोर्ड और वरिष्ठ प्रबंधन द्वारा प्रभावी और सामूहिक निरीक्षण की आवश्यकता होती है। इसमें जोखिम प्रबंधन और आंतरिक लेखा परीक्षा के नियंत्रण स्तर भी शामिल होंगे। उपयुक्त जोखिम संस्कृति को विकसित करने के उद्देश्य से इन्हें उचित जोखिम लेने की क्षमता पर आधारित होना चाहिए। नैतिक आचरण, लेखांकन पारदर्शिता और उपयुक्त व्यवसाय मॉडल व्यापक शासन ढांचे के विभिन्न घटक हैं। संगठनात्मक संस्कृति नैतिक आचरण और पारदर्शिता प्रथाओं दोनों पर पर्याप्त प्रभाव डाल सकती है।

नैतिक आचरण

यूएस सुप्रीम कोर्ट के पूर्व एसोसिएट जस्टिस पॉटर स्टीवर्ट ने एक बार कहा था: "नैतिकता यह जानना है कि आपको क्या करने का अधिकार है और क्या करना सही है"। नैतिकता व्यवसाय के मिशन के अनुसार व्यावसायिक रूप से जोखिमों का प्रबंधन करके और वैध रूप से मुनाफा करके जिम्मेदार पेशेवर व्यवहार का संचालन है। यह आवश्यक है कि एक व्यवसाय का बोर्ड और वरिष्ठ प्रबंधन एक व्यापक आंतरिक आचार संहिता की स्थापना करके अपने संगठन में नैतिकता की एक मजबूत भावना पैदा करे, जिसे आसानी से और स्पष्ट रूप से देखा जाता है, संगठन में लगातार संचार और प्रसार किया जाता है। एक व्यावसायिक इकाई की ताकत और व्यवहार्यता सीधे उसकी संगठनात्मक संस्कृति और नैतिकता से आती है।

लेखांकन में पारदर्शिता

एक मजबूत कॉरपोरेट गवर्नेंस ढाँचा के लिए आवश्यक है कि व्यवसाय में विवेकपूर्ण लेखांकन प्रथाओं का पालन हो और पारदर्शी प्रकटीकरण को स्थान मिले। बाजार सहभागियों को पर्याप्त जानकारी उपलब्ध कराई जानी चाहिए ताकि वे एक व्यावसायिक इकाई के स्वास्थ्य और व्यवहार्यता के बारे में सूचित निर्णय लेने में सक्षम हो सकें। रचनात्मक और आक्रामक लेखा तकनीक और नीतियां वित्तीय शक्ति को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करती हैं और यह किसी व्यवसाय की दीर्घकालिक स्थिरता के लिए हानिकारक होगी। निदेशक मंडल और लेखा परीक्षा समिति को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वित्तीय विवरणों की संपूर्णता से किसी भी तरह से समझौता नहीं किया गया है। मजबूत कॉरपोरेट गवर्नेंस और उच्च पारदर्शिता वाली संस्थाओं को निवेशकों द्वारा उच्च मूल्यांकन मेट्रिक्स के साथ पुरस्कृत किया जाता है और वे बहुत सस्ती कीमत पर पूंजी जुटाने में भी सक्षम होते हैं।

रिज़र्व बैंक ने यह सुनिश्चित करने के लिए अपनी विनियमित संस्थाओं के लिए कई प्रकटन अनिवार्य किए हैं कि वे अपने वित्तीय विवरणों में सभी महत्वपूर्ण जानकारी का पूर्ण और निष्पक्ष प्रकटीकरण करें। यह उन्हें प्रासंगिक, विश्वसनीय, तुलनीय और पारदर्शी बना देगा।

व्यापार मॉडल

व्यक्तिगत संस्थाओं के व्यावसायिक मॉडल और व्यावसायिक रणनीतियाँ सचेत विकल्प होने चाहिए, जिन्हें सभी प्रासंगिक

पहलुओं पर विचार करने के बाद बोर्ड में एक मजबूत रणनीतिक चर्चा के बाद अपनाया गया हो। व्यवसायों को तुलन पत्र में अत्यधिक जोखिम के निर्माण की परवाह किए बिना आक्रामक अल्पकालिक लाभ की इच्छा करने वाली संस्कृति से बचना चाहिए। कुछ अनुपयुक्त व्यापार मॉडल या रणनीतियों की सामान्य विशेषताओं में निम्नलिखित शामिल हैं:

- अनुचित निधिगत संरचना;
- आस्ति देयता असंतुलन का निर्माण जो अत्यधिक जोखिम भरा है और टिकाऊ नहीं है;
- अवास्तविक रणनीतिक धारणाएं, विशेष रूप से क्षमताओं, विकास के अवसरों और बाजार के रुझानों के बारे में अत्यधिक आशावाद, जो खराब रणनीतिक निर्णयों को जन्म दे सकता है, जो व्यापार मॉडल व्यवहार्यता को प्रभावित करते हैं; तथा
- नियंत्रण और अनुपालन प्रणालियों की उपेक्षा के साथ व्यावसायिक विचारों पर अधिक ध्यान दें।

जैसा कि मैंने पहले कहा, जोखिम उठाना व्यवसाय का अभिन्न अंग है। अब मैं जिस पर जोर दे रहा हूं, वह यह है कि इसे शुरू करने से पहले हर जोखिम के उतार-चढ़ाव को ध्यानपूर्वक तौलना चाहिए।

निष्कर्ष

भारत में मेहनती उद्यमियों और व्यवसायों का एक लंबा इतिहास रहा है। एक मायने में, भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास अनिवार्य रूप से वर्षों में भारतीय व्यवसायों में देखे गए परिवर्तन का प्रतिबिंब है। भारतीय उद्यमिता की कहानी आकर्षक है और अब हम उद्यमियों की एक नई पीढ़ी देख रहे हैं जो व्यवसायों की अवधारणा, संगठन और संचालन में युगांतरकारी परिवर्तनों के ध्वजवाहक हैं । आज के अपने भाषण में, मैंने कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं को उजागर करने का प्रयास किया है जो सफल और टिकाऊ व्यवसायों की महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं।

रिज़र्व बैंक में, हम आर्थिक प्रगति के लिए मौजूदा और साथ ही उभरते व्यवसायों की भूमिका को पहचानते हैं। किसी भी व्यवसाय की दीर्घकालिक सफलता सीधे तौर पर उसके अभिशासन की गुणवत्ता, आंतरिक नियंत्रण प्रणाली और उसके जोखिम और संगठनात्मक संस्कृति की मजबूती से जुड़ी होती है। रिज़र्व बैंक कई उपायों के माध्यम से अपनी विनियमित संस्थाओं के अभिशासन और अनुपालन संस्कृति में सुधार पर जोर दे रहा है।

भारतीय व्यापार अब अवसरों और चुनौतियों दोनों के साथ एक महत्वपूर्ण मोड़ पर है। व्यापक आर्थिक और भू-राजनीतिक वातावरण तेजी से बदल रहा है और सतर्क रहने की अधिक आवश्यकता है। मुझे विश्वास है कि हमारे प्रतिभा वान उद्यमियों में चुनौतियों से निपटने, अवसरों का लाभ उठाने और आगे बढ़ने की पर्याप्त क्षमता है। सफलता में दृढ़ता की भूमिका के बारे में स्टीव जॉब्स ने जो कहा था, उसे याद करते हुए मुझे समाप्त करना चाहिए: "यदि आप वास्तव में करीब से देखते हैं, तो एक दिन की अधिकांश सफलताओं में लंबा समय लगता है।" [3]

आजादी का अमृत महोत्सव के प्रतिष्ठित सप्ताह के इस महान अवसर पर आप सभी को मेरी शुभकामनाएं।

धन्यवाद । सुरक्षित रहें। स्वस्थ रहें। नमस्कार!

[3] पिक्सर के बारे में साक्षात्कार, एमरीविल, कैलिफोर्निया, 2007।